पाठ 11: वस्तु विनिमय से मुद्रा तक

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1. वस्तु विनिमय प्रणाली कैसे कार्य करती थी और इस प्रणाली में किस प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग विनिमय हेतु किया जाता था?

उत्तर:

- वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तुओं का आदान-प्रदान सीधे वस्तुओं के बदले किया जाता था।
- इसमें मुद्रा का उपयोग नहीं होता था।
- लोग अपनी आवश्यकता की वस्तु के बदले दूसरी वस्तु प्राप्त करते थे।

प्रयोग की जाने वाली वस्तुएँ:

- अनाज
- पशु
- नमक
- कपड़ा
- धातुएँ
- कौड़ियाँ

प्रश्न 2. वस्तु विनिमय प्रणाली की क्या सीमाएँ थीं?

उत्तर:

- दोनों पक्षों की आवश्यकताओं का मिलना आवश्यक था।
- वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करना कठिन था।
- बड़ी वस्तुओं को ले जाना कठिन होता था।
- वस्तुओं को लंबे समय तक सुरक्षित रखना संभव नहीं था।
- व्यापार में समय और श्रम अधिक लगता था।

प्रश्न 3. प्राचीन भारतीय सिक्कों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

उत्तर:

- सिक्के मुख्यतः चाँदी, ताँबे और सोने के बने होते थे।
- उन पर विभिन्न चिन्ह और प्रतीक अंकित होते थे।
- पंच-चिह्नित (Punch-marked) सिक्के प्रचलित थे।
- सिक्कों का उपयोग व्यापार और कर भुगतान में किया जाता था।
- वे मूल्य के मानक के रूप में कार्य करते थे।

प्रश्न 4. समय के साथ मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कैसे परिवर्तित हुई?
उत्तर:

- प्रारंभ में वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी।
- बाद में कौड़ियों, धातुओं और सिक्कों का उपयोग शुरू हुआ।
- इसके बाद कागजी मुद्रा का प्रचलन बढ़ा।
- वर्तमान समय में डिजिटल भुगतान, एटीएम कार्ड और UPI का उपयोग हो रहा है।
- इस प्रकार मुद्रा समय के साथ अधिक सुविधाजनक और आधुनिक बनती गई।

प्रश्न 5. प्राचीन काल में कौन-से कदम उठाए गए होंगे जिससे भारतीय सिक्के विभिन्न देशों में विनिमय का माध्यम बन सकें?
उत्तर:

- सिक्कों की शुद्धता और गुणवत्ता बनाए रखी गई होगी।
- उनका वजन और मूल्य निश्चित किया गया होगा।
- व्यापारिक मार्गों का विकास किया गया होगा।
- विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित किया गया होगा।
- शासकों की मुहर और प्रतीकों से सिक्कों की विश्वसनीयता बढ़ी होगी।

प्रश्न 6. अर्थशास्त्र की पंक्तियों के आधार पर बताइए कि एक पण के मूल्य के विषय में क्या जानकारी मिलती है? इससे मानवीय मूल्यों के बारे में क्या निष्कर्ष निकलता है?
उत्तर:

- 60 पण एक वर्ष का वेतन था, इसलिए एक पण का मूल्य काफी महत्वपूर्ण था।
- 100 पण का दंड वार्षिक वेतन से भी अधिक था।
- इससे पता चलता है कि पड़ोसी की सहायता न करना गंभीर अपराध माना जाता था।
- समाज में सहयोग, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व दिया जाता था।
- लोगों को एक-दूसरे की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

प्रश्न 7. एक नाटक लिखिए और उसका मंचन कीजिए जिसमें यह दिखाया जाए कि लोग एक-दूसरे को कौड़ी, कवच (और ऐसी अन्य वस्तुओं) को विनिमय के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के लिए कैसे तैयार कर सके होंगे?
उत्तर:

पात्र:

- व्यापारी 1
- व्यापारी 2
- किसान
- गाँव का मुखिया

संवाद:

किसान: मुझे अनाज के बदले कपड़ा चाहिए, लेकिन हर बार वस्तु बदलना कठिन है।
व्यापारी 1: क्यों न हम कौड़ियों का उपयोग करें?
व्यापारी 2: यदि सभी कौड़ियों को मूल्यवान मान लें तो व्यापार आसान हो जाएगा।
मुखिया: यह अच्छा विचार है। आज से कौड़ियाँ विनिमय का माध्यम होंगी।
किसान: अब हमें वस्तुओं के सीधे आदान-प्रदान की परेशानी नहीं होगी।
सभी: सहमत हैं!

प्रश्न 8. भारत में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) कागजी मुद्रा की सुरक्षा के लिए कौन-कौन से उपाय अपनाता है?
उत्तर:

- वॉटरमार्क (जलचिह्न)
- सुरक्षा धागा (Security Thread)
- महात्मा गांधी की तस्वीर
- रंग बदलने वाली स्याही
- उभरी हुई छपाई (Raised Printing)
- सी-थ्रू रजिस्टर
- माइक्रो लेटरिंग

इन सुरक्षा उपायों से नकली नोटों की पहचान करना आसान होता है।

प्रश्न 9. अपने परिवार के कुछ सदस्यों और स्थानीय दुकानदारों का साक्षात्कार लीजिए और उनसे पूछिए कि वे भुगतान करने या प्राप्त करने में नकद या UPI में किसको वरीयता देंगे और क्यों?

उत्तर :

व्यक्ति	**पसंद**	**कारण**
पिता जी	UPI	तेज और सुविधाजनक
माता जी	नकद	खर्च का स्पष्ट हिसाब रहता है
दुकानदार 1	UPI	तुरंत भुगतान प्राप्त होता है
दुकानदार 2	नकद	इंटरनेट पर निर्भर नहीं
छात्र	UPI	मोबाइल से आसानी से भुगतान

निष्कर्ष:

- आजकल अधिकांश लोग सुविधा और तेजी के कारण UPI को पसंद करते हैं।
- फिर भी कुछ लोग सरलता और विश्वसनीयता के कारण नकद भुगतान को प्राथमिकता देते हैं।

To get notes visit our website

mukutclasses.in